पाठ- 2

लाख की चूड़ियाँ

लेखक: कामतानाथ
विधा: कहानी

प्रश्न - अभ्यास

कहानी से

प्र.1.) बचपन में लेखक अपने मामा के गाँव चाव से क्यों जाता था और बदलू को 'बदलू मामा' न कहकर 'बदलू काका' क्यों कहता था?

उ.1.) बचपन में लेखक अपने मामा के गाँव चाव से इसलिए जाता था क्योंकि जब लेखक वहाँ से लौटता था तो बदलू उसे ढेर सारी गोलियाँ देता था, रंग बिरंगी गोलियाँ जो किसी भी बच्चे का मन मोह लें। वह बदलू को 'बदलू मामा' न कहकर 'बदलू काका' इसलिए कहता था क्योंकि गाँव के सभी बच्चे उसे 'बदलू काका' कहा करते थे।

प्र.2.) वस्तु- विनिमय क्या है? विनिमय की प्रचलित पद्धति क्या है?

उ.2.) वस्तु विनिमय से तात्पर्य है पैसों से न खरीदकर एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु लेना। विनिमय की प्रचलित पद्धति है, पैसे देकर वस्तु का लेना है।

Scanned by CamScanner

प्र॰3) "मशीनी युग ने कितने हाथ काट दिए हैं।" - इस पंक्ति में लेखक ने किस व्यथा की ओर संकेत किया है?

उ॰3) "मशीनी युग ने कितने हाथ काट दिए हैं।" - इस पंक्ति में लेखक ने मशीनों का अंधाधुंध प्रयोग करने से उत्पन्न बेकारी और बेरोजगारी की ओर संकेत किया है। चूँकि सैकड़ों मनुष्यों का काम करने के लिए केवल कुछ ही मशीनें काफी हैं। ऐसे में बहुत से कुशल कारीगर बेकार हो जाते हैं। वे बेरोजगार होकर भूखे मरने की कगार पर पहुँच जाते हैं। कारीगरों की इस व्यथा की ओर लेखक ने संकेत किया है।

प्र॰4) बदलू के मन में ऐसी कौन-सी व्यथा थी जो लेखक से छिपी न रह सकी?

उ॰4) चूड़ियाँ बनाने वाले कुशल कारीगर बदलू का काम छिन चुका था। वह असहाय तथा लाचार हो गया था। जिस काँच की चूड़ियों से उसे चिढ़ थी आज वही हर ओर दिखाई पड़ रही थी। अब कारीगरी के बदले कम सुंदरता तथा चमक को महत्व दिया जा रहा था। यह व्यथा लेखक से छिपी न रह सकी।

प्र॰5) मशीनी युग से बदलू के जीवन में क्या बदलाव आया?

Scanned by CamScanner

उ.5) मशीनी युग के कारण बदलू का काम छिन गया। वह बेरोजगार हो गया। उसे गरीबी में जीवन बीताना पड़ा। उसे अपनी गाय बेचनी पड़ी। वह कमजोर तथा वृद्ध हो गया। उसके माथे पर नसे उभर आई। वह बीमार तथा चिंतित रहने लगा।

Scanned by CamScanner

17/7/19 Wednesday

पाठ-3- बस की यात्रा

विधा: व्यंग्य
लेखक: हरिशंकर परसाई

प्र.1.) "मैंने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा।"
• लेखक के मन में हिस्सेदार ~~की तरफ~~ साहब के लिए श्रद्धा क्यों जग गई ?

उ.1.) लेखक की दृष्टि में बसकंपनी के हिस्सेदार महोदय त्याग की प्रतिमूर्ति थे क्योंकि वे अपने प्राणों का बलिदान करने के लिए तो तैयार थे किंतु बस के टायर बदलने के लिए नहीं। इस पंक्ति में लेखक ने पैनी व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है।

प्र.2.) "लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफर नहीं करते।"
• लोगों ने यह सलाह क्यों दी।

उ.2.) लोगों ने शाम वाली बस से सफर नहीं करने की सलाह दी क्योंकि यह बस बहुत पुरानी, जर्जर, खटारा और टूटी-फूटी थी तथा इसके माध्यम से सुरक्षित यात्रा करके गंतव्य तक पहुँचने में संदेह था।

Scanned by CamScanner

प्र.3) "ऐसा जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं।" - लेखक को ऐसा क्यों लगा?

उ.3) जब बस चालू हुई तो पूरी बस पूरी तरह से हिल उठी। तब लेखक को ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो सारी बस ही इंजन है और वे इंजन के भीतर बैठे हैं। अर्थात इंजन के स्टार्ट होने पर इंजन के पुर्जों की भाँति बस के यात्री हिल रहे थे।

प्र.5) "मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था।" - लेखक पेड़ों को दुश्मन क्यों समझ रहा था?

उ.5) लेखक को बस की कार्य-क्षमता पर बिल्कुल भरोसा नहीं था क्योंकि बार-बार बस खराब हो रही थी तथा उसका कोई न कोई पुर्जा खराब हो जाता था। इसी कारण लेखक को बहुत डर लग रहा था और वे सोचने लगते थे कि यदि ब्रेक फेल हो गया तो बस सामने के किसी पेड़ से टकराकर बस दुर्घटनाग्रस्त हो जाएगी और वह मर जाएगा। लेखक इसीलिए पेड़ों को अपना दुश्मन समझ रहा था।

प्र.4) "गजब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है।" - लेखक को यह सुनकर हैरानी क्यों हुई?

Scanned by CamScanner

उ.4.) बस की खराब हालत देखकर लेखक को यह विश्वास नहीं हो पा रहा था कि यह बस अपने आप (बिना धक्का के) चलती है। किंतु जब बस अपने आप स्टार्ट होकर चल पड़ी तब लेखक आश्चर्य चकित रह गए।

पाठ से आगे

प्र.1.) 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' किसके नेतृत्व में, किस उद्देश्य से तथा कब हुआ था? इतिहास की उपलब्ध पुस्तकों के आधार पर लिखिए।

उ.1.) 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' महात्मा गाँधी के नेतृत्व में सन् 1930 में अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध शुरू किया गया। उस समय भारतीय समाज गरीबी में दिन बिता रहा था। लोगों को मुश्किल से दो जून की रोटी नसीब हो रही थी। वे मुश्किल से रोटी नमक खाकर गुजारा कर रहे थे। अंग्रेज़ों ने नमक पर भी टैक्स लगा दिया। इससे नाराज गांधीजी ने कानून भंग किया। सविनय अवज्ञा आंदोलन के निम्नलिखित उद्देश्य थे :-

1.) भारतीय किसान व्यावसायिक खेती करने पर विवश थे क्योंकि व्यापार में मंदी और गिरती कीमतों के कारण वे परेशान थे।

Scanned by CamScanner

2.) उनकी आय कम होती जा रही थी और वे लगान का भुगतान न कर पा रहे थे।

3.) ब्रिटिश सरकार के शोषण के विरुद्ध इसे हथियार बनाया गया।

प्र.2.) सविनय अवज्ञा का उपयोग व्यंगकार ने किस रूप में किया है? लिखिए।

उ.2.) सविनय अवज्ञा का उपयोग व्यंगकार ने बस की जीर्ण - शीर्ण तथा खटारा दशा होने के बावजूद उसके चलने या चलाए जाने के संदर्भ में किया है। यह आंदोलन 1930 में अंग्रेजी सरकार की आज्ञा न मानने के लिए किया गया था। 12 मार्च 1930 को डांडी मार्च करके नमक कानून तोड़ा गया। अंग्रेजों की दमनपूर्ण नीति के खिलाफ भारतीय जनता विनयपूर्वक संघर्ष के लिए आगे बढ़ती रही यह खटारा बस भी जर्जर होने के बावजूद चलती जा रही थी।

प्र.3.) आप अपनी किसी यात्रा के खट्टे - मीठे अनुभवों को याद करते हुए एक लेख लिखिए।

Scanned by CamScanner

3.3) एकबार हम भोपाल गए थे। वापसी में शतपर सफर करके सुबह दुर्ग रेल्वे स्टेशन पर उतरे। उतरते वक्त मेरी माँका बटुआ सीट पर छूट गयाथा। इस बटुआ में मेरी माँका आधारकार्ड और कुछ रुपए थे। शाम को गोंदिया रेल्वे पुलिस का फोन मेरी माँ को आया। किसी अज्ञात व्यक्ति ने खोया हुआ बटुआ पैसे सहित गोंदिया रेल्वे स्टेशन में जमा करा दिया था। खोया हुआ पर्स पाकर माँ एवं हमारा पुरा परिवार खुश था तथा रेल्वे पुलिस एवं उस अज्ञात व्यक्ति को बहुत धन्यवाद दिया।

Scanned by CamScanner

जनयेन्मधुमक्षिकासौ (जनयेत्+मधुमक्षिका+असौ)	–	यह मधुमक्खी पैदा करती/ निर्माण करती है
सन्तस्तथैव (सन्तः+तथा+एव)	–	वैसे ही सज्जन
सृजन्ति	–	निर्माण करते हैं
वायसाः	–	कौए
वल्कल	–	पेड़ की छाल
दारुभिः	–	लकड़ियों द्वारा
महीरुहाः	–	वृक्ष
कूपखननं	–	कुआं खोदना
वह्निना	–	अग्नि द्वारा

अभ्यासः

पाठे दत्तानां पद्यानां सस्वरवाचनं कुरुत।

श्लोकांशेषु रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) समुद्रमासाद्य ..... ।

(ख) ..... वचः मधुरसूक्तरसं सृजन्ति।

(ग) तद्भागधेयं ..... पशूनाम्।

(घ) विद्याफलं ..... कृपणस्य सौख्यम्।

(ङ) पौरुषं विहाय यः ..... अवलम्बते।

(च) चिन्तनीया हि विपदाम् .....प्रतिक्रियाः।

प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत-

(क) व्यसनिनः किं नश्यति?

(ख) कस्य यशः नश्यति?

(ग) मधुमक्षिका किं जनयति?

(घ) मधुरसूक्तरसं के सृजन्ति?

(ङ) अर्थिनः केभ्यः विमुखा न यान्ति?

4. अधोलिखित-तद्भव-शब्दानां कृते पाठात् चित्वा संस्कृतपदानि लिखत-

यथा- कंजूस — कृपणः

कड़वा	.....
पूँछ	.....
लोभी	.....
मधुमक्खी	.....
तिनका	.....

5. अधोलिखितेषु वाक्येषु कर्तृपदं क्रियापदं च चित्वा लिखत-

वाक्यानि	कर्त्ता	क्रिया
यथा-सन्तः मधुरसूक्तरसं सृजन्ति।	सन्तः	सृजन्ति
(क) निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।	.....	.....
(ख) गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति।	.....	.....
(ग) मधुमक्षिका माधुर्यं जनयेत्।	.....	.....
(घ) पिशुनस्य मैत्री यशः नाशयति।	.....	.....
(ङ) नद्यः समुद्रमासाद्य अपेयाः भवन्ति।	.....	.....

6. रेखाङ्कितानि पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) गुणाः गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति।

(ख) नद्यः सुस्वादुतोयाः भवन्ति।

(ग) लुब्धस्य यशः नश्यति।

(घ) मधुमक्षिका माधुर्यमेव जनयति।

(ङ) तस्य मूर्ध्नि तिष्ठन्ति वायसाः।

7. उदाहरणानुसारं पदानि पृथक् कुरुत-

यथा-समुद्रमासाद्य — समुद्रम् + आसाद्य

माधुर्यमेव – माधुर्यम् + एव

अल्पमेव – अल्पम् + एव

सर्वमेव – सर्वम् + एव

दैवमेव – दैवम् + एव

महात्मनामुक्तिः – महात्मनाम् + उक्तिः

विपदामादावेव – विपदाम् + आदौ + एव

योग्यता-विस्तार

प्रस्तुत पाठ में महापुरुषों की प्रकृति, गुणियों की प्रशंसा, सज्जनों की वाणी, साहित्य-संगीत-कला की महत्ता, चुगलखोरों की दोस्ती से होने वाली हानि, स्त्रियों के प्रसन्न रहने में सबकी खुशहाली को आलङ्कारिक भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

पाठ के श्लोकों के समान अन्य सुभाषितों को भी स्मरण रखें तथा जीवन में उनकी उपादेयता/संगति पर विचार करें।

(क) येषां न विद्या न तपो न दानम्
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।

(ख) गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः।

(ग) न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।

(घ) दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययाऽलङ्कृतोऽपि सन्।

(ङ) न प्राणान्ते प्रकृतिविकृतिर्जायते चोत्तमानाम्।

(च) उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तङ्गते तथा (उदेति सविता ताम्रस्ताम् एवास्तमेति च)।
सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता।।

उपर्युक्त सुभाषितों के अंशों को पढ़कर स्वयं समझने का प्रयत्न करें तथा संस्कृत एवं अन्य भारतीय-भाषाओं के सुभाषितों का संग्रह करें।

'गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति'–इस पंक्ति में विसर्ग सन्धि के नियम में 'गुणाः' के विसर्ग का दोनों बार लोप हुआ है। सन्धि के बिना पंक्ति 'गुणाः गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति' होगी।